**29/05/2020**

# Social Psychology

Paper V

B.A. III (Hons.)

# Discuss the Different Kinds of Group.

# समूह के विभिन्न प्रकारों का वर्णन करें।

समूह का वर्गीकरण वभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से किया है। सभी मनोवैज्ञानिकों के विभाजन का आधार अलग-अलग है। समूह के कुछ मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं -

## 1) प्राथमिक और द्वितीयक समूह (Primary and Secondary Group) –

Cooley ने सदस्यों के पारस्परिक संबंधों के आधार पर समूह को दो वर्गों में विभाजित किया है।

### i) प्राथमिक समूह (Primary Group) –

प्राथमिक समूह में सदस्यों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। जैसे- परिवार, कार्य समूह, आदि प्राथमिक समूह के उदाहरण हैं। इसमें व्यक्ति के साथ आमने-सामने का सम्बन्ध होता है। **Lindgren** ने कहा है "**प्राथमिक समूह का तात्पर्य ऐसे समूह से है, जिसमें पारस्परिक सम्बन्ध बारंबारता एक साथ घटित होते हैं।**"

प्राथमिक समूह के सदस्यों के बीच हम की भावना अधिक रहती है। इस प्रकार के समूह के सदस्यों के मनोवैज्ञानिक पहलुओं, जैसे मनोवृत्तियों, आदतों, कार्य-व्यवहारों, आदि में दृड़ता पायी जाती है। इसका आकार छोटा होता है। यह एक-दूसरे के सुख-दुःख से प्रभावित होते हैं। ऐसा समूह स्थायी होता है।

### ii) द्वितीयक समूह (Secondary Group) –

द्वितीयक समूह के सदस्यों के बीच औपचारिक सम्बन्ध अधिक होगा। इसमें आपसी सम्बन्ध के आधार, धार्मिक-निष्ठा, राजनैतिक दाल की सदस्यता, वर्ग निष्ठा आदि होते हैं। इनके सदस्य एक जगह एकत्रित नहीं होते, बल्कि किसी माध्यम से आपस में जुड़े होते हैं। जैसे - सामाजिक संगठन, राजनैतिक दाल, शैक्षिक संस्थान, आदि इसके उदाहरण हैं। इस सम्बन्ध में **Lindgren** ने लिखा है, **"द्वितीयक समूह अधिक अवैयक्तिक होते हैं तथा सदस्यों के बीच औपचारिक तथा संविदात्मक सम्बन्ध होते हैं।"**

**2) <u>स्थायी तथा अस्थायी समूह (Permanent and Temporary Group) –</u>**

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने स्थायित्व के आधार पर स्थायी तथा अस्थायी दो प्रकार के समूहों की चर्चा की है। स्थायी समूह ऐसे समूह को कहते हैं, जिसका अस्तित्व हमेशा बना रहता है। उसके सदस्य एक लक्ष्य की पूर्ति के बाद दूसरे लक्ष्य की पूर्ति के लिए पुनः प्रयत्नशील हो जाते हैं। जैसे - कर्मचारी संघ, शिक्षक संघ, आदि। परन्तु दूसरी ओर कुछ ऐसे समूह होते हैं जो क्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनते हैं और आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ ही समाप्त हो जाते हैं। जैसे - दंगा पीड़ितों की सहायता के लिए जो समूह बनाया जाता है वह उद्देश्य की पूर्ति के साथ ही समाप्त हो जाता है। ऐसे समूह को अस्थायी समूह कहा जाता है।

**3) <u>स्व-समूह तथा पर-समूह (In Group and Out Group)</u>** –

समान अभिरुचि तथा समान उद्देश्य के लोग जो समूह बनाते हैं, उसे स्व-समूह या 'हम' समूह कहा जाता है। इसके सदस्यगण आपस में मिल कर शांति पूर्वक रहते हैं तथा समूह के आदर्शों का पालन करते हैं। ऐसे समूह में सहयोग की भावना अधिक पायी जाती है। लेकिन पर-समूह इसके ठीक विपरीत होता है। इसमें सदस्यों के बीच अभियोजन का अभाव होता है। इसमें जाती, भाषा तथा अभिरुचि का बंधन नहीं होता है। जैसे - उत्तर भारत के लोगों के व्यवहार को देख कर दक्षिण भारत के लोग आश्चर्य करते हैं। इनकी भाषा, लिपि, खान-पान सभी विचित्र मालूम पड़ते हैं।

**4) <u>खुला तथा बंद समूह (Open and Closed Group) –</u>**

**Adverse** ने खुला एवं बंद दो प्रकार के समूह की चर्चा की है। उनके अनुसार खुला समूह उस समूह को कहते हैं, जिनमें आसानी से कोई भी व्यक्ति सदस्यता ग्रहण कर सकता है। जैसे - कोई राजनैतिक दाल। इस प्रकार के समूह में सदस्यों की संख्या बहुत अधिक होती है। परन्तु बंद समूह ऐसा समूह है जिसका सदस्य सभी व्यक्ति नहीं हो सकते हैं। उसमें तरह-तरह से छान-बीन कर लेने के बाद ही किसी व्यक्ति को उसका सदस्य बनाया जाता है। जैसे - किसी प्रतिष्ठित क्लब का सदस्य बनना बहुत कठिन होता है। ऐसे समूह को बंद समूह की संज्ञा देते हैं।

**5) <u>संगठित एवं असंगठित समूह (Organised and Unorganised Group) –</u>**

संगठन के आधार पर भी समूह को दो भागों में बांटा जा सकता है। इस प्रकार के समूह को संगठित तथा असंगठित समूह में विभाजित कर सकते हैं। किसी नियम, आदर्श, सहयोग तथा परस्पर एकता के आधार पर जो समूह निर्भर होता है उसे संगठित समूह कहते हैं। इसके सदस्य समूह के आदर्शों से बंधे होते हैं। इस प्रकार के समूह के सदस्यों का मनोबल बहुत ऊँचा होता है। वे लोग आपस में एक-दूसरे को बहुत अधिक सहयोग देते हैं। इसके सदस्यों में हम की भावना पायी जाती है। इसके

ठीक विपरीत असंगठित समूह के सदस्यों में आपस में सहयोग की भावना काम होती है। वे एक-दूसरे पर विश्वास नहीं करते हैं। इसके सदस्यों का मनोबल बहुत अधिक गिरा हुआ होता है। ऐसे समूह में क्षणिक उद्देश्य की पूर्ती के लिए लोग एकत्र होते हैं।

**6) <u>लम्बीय तथा समतल समूह (Vertical and Horizontal Group) –</u>**

इस प्रकार का विभाजन **Herbert Miller** ने प्रस्तुत किया है। लम्बीय समूह के सदस्यों के बीच सामजिक दूरी अधिक होती है, जबकि समतल समूह में सदस्य आपस में मिल-जुल कर बराबर रूप से रहते हैं। इसके अंतर्गत कवी, संगीतकार, आदि का समूह आता है। एक ही व्यक्ति कवी और संगीतकार दोनों हो सकता है। इस प्रकार एक ही व्यक्ति कई समूहों का सदस्य हो सकता है। लेकिन कुछ समूह ऐसे होते हैं जिनमें एक ही व्यक्ति कई समूह का सदस्य नहीं हो सकता है। जैसे - एक ही व्यक्ति स्त्रियों और पुरषों के समूह का सदस्य नहीं हो सकता, धनि और निर्धन समूह का सदस्य एक ही व्यक्ति नहीं हो सकता। इसमें सामजिक दुरी अधिक होती है।

**7) <u>आकस्मिक तथा प्रयोजनात्मक समूह (Accidental and Purposive Group) -</u>**

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक **Mc Dougal** ने समूह की उत्पत्ति के आधार पर आकस्मिक तथा प्रजोयनात्मक दो प्रकार के समूहों की चर्चा की है। आकस्मिक समूह एकाएक किसी स्थान पर बन जाता है। जैसे - रेल यात्रियों का समूह एकाएक बनता है, इसे आकस्मिक समूह कहेंगे। परन्तु दूसरी ओर कुछ ऐसे समूह हैं जो सोच-समझकर खास उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बनाये जाते हैं। जैसे - राजनैतिक पार्टी, आदि।

**8) <u>उदार तथा कठोर समूह (Liberal and Hostile Group) –</u>**

कुछ समूह समाज कल्याण एवं जनता की भलाई के लिए बनाये जाते हैं। जैसे - राजनैतिक पार्टी, धार्मिक संस्था, आदि। परन्तु इसके ठीक विपरीत कुछ ऐसे समूह होते हैं जो समाज को हानि पहुंचाते हैं। जैसे - आतंकवादियों का समूह। इसका कम है देश या जनता को तबाह करना।

**9) <u>राष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय समूह (National and International Group) –</u>**

राष्ट्रिए समूह उसे कहेंगे जो सिर्फ एक राष्ट्र तक सीमित रहते हैं, जैसे - कांग्रेस पार्टी। लेकिन कुछ ऐसे भी समूह हैं जो कई देश मिल कर बनाते हैं, जैसे – SAARC, UNO।

**10) <u>भ्रमणकारी एवं स्थिर समूह (Mobile and Immobile Group) –</u>**

कुछ समूह ऐसे होते हैं जो एक जगह पर स्थिर नहीं रहते, बल्कि भ्रमण करते हैं, जैसे - खानाबदोश का समूह। इसके विपरीत अधिकांश समूह ऐसे होते हैं जो स्थिर होते हैं। वे एक जगह रह कर अपने उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं, जैसे - पुस्तक व्यवसायियों का समूह।

## 11) समूह का आधुनिक वर्गीकरण (Recent Classification of Group) –

समूह का विभाजन आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा भी किया गया है, जो इस प्रकार है -

i) घनिष्ठ समूह

ii) प्राथमिक समूह

iii) मध्य समूह

iv) सहकारी समूह

- घनिष्ठ समूह में ऐसे लोग आते हैं जो आपस में घनिष्ठ रूप से सम्बंधित होते हैं। जैसे - परिवार।
- प्राथमिक समूह के अंतर्गत छोटे समूह को रखा जा सकता है, जैसे खिलाड़ियों का समूह।
- इसी प्रकार मध्य समूह तथा सहकारी समूह के अंतर्गत राजनैतिक पार्टियां आदि बनते हैं।

**(…to be continued)**

**Dr. Hena Hussain**

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com